॥ श्री: ॥

॥ हरि सर्वोत्तम॥ ॥ हरॆ श्रीनिवास॥ ॥ वायु जीवॊत्तम ॥

॥ श्री पुरंदरदासवर्यादि समस्त गुरुभ्यॊनम: ॥

श्री पुरंदर विठल सॆवा ट्रस्ट्

श्री पुरंदराश्रम, ऒं नगर् पॊस्ट्,
आदवानि (ता), कर्नूल् (जि), आं.प्र.

॥ श्री गुरुगॊविंद विठलात्मक श्री हरिनारायण विठलॊ विजयतॆ ॥

॥ श्री मंत्रमंदिर निलयाय नम: ॥

॥ श्री गुरुराजॊ विजयतॆ ॥

१. अथ द्वादश गुरु नमस्कार:

१. श्री गुरुभ्यॊनम:

२. श्री परम गुरुभ्योनम:

३. श्री मदानंद तीर्थ भगवद्पादाचार्येभ्यो नम:

४. श्री वेदव्यासाय नम:

५. श्री भारत्यै नम:

६. श्री सरस्वत्यै नम:

७. श्री वायवे नम:

८. श्री ब्रह्मणे नम:

९. श्री महालक्ष्मियै नम:

१०. श्रीमन्नारायणाय नम:

११. ऐकादश स्थाने श्री लक्ष्मीनृसिंहाभिन्न श्रीमज्जगन्नाथ विठलाभिन्न अश्विनी हयग्रीवात्मक श्री बिंबराजाय नम:

१२. द्वादश स्थाने मोक्षप्रद श्री वासुदेवाय नम:

२. अथ संकल्प:

शुभे शोभन मुहूर्ते अद्य ब्रह्मण: द्वितीय परार्धे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे भरतवर्षे

भरतखंडे जंबूद्वीपे दंडकारण्ये गॊदावर्या: दक्षिणॊ तीरॆ शालिवाहनशखे बौध्धावतारे रामक्षॊत्रे अस्मिन् वर्तमानॆन श्रीचांद्रमानॆन विकृति नाम संवत्सरॆ उत्तरायणॊ वसंत ऋतौ ..... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... नक्षत्रे .... यॊग .... कर्ण .... वासर युक्तानां ऎवंगुण विशॆषण विशिष्टादि शुभ तिथौ अस्मद्गुरॊर्गुर्वंतर्गत श्री मद्राघवेंद्र तीर्थादि समस्त सॊत्तम गुर्वंतर्गत लातव्य चक्रवर्ति भाविसमीर श्रीमद्वादिराज तीर्थ गुर्वंतर्गत भारतीरमण मुख्यप्राणांतर्गत, रामनरहरि कृष्ण कृष्णात्मक चक्रधर नारायणात्मक सर्वारिष्ठ निरसनात्मक श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंहाभिन्न, सर्वेष्टप्रद बंगारुगिरिवास श्री-भूसमॆत श्री श्रीनिवासाभिन्न श्री जगन्नाथ विठलाभिन्न श्री अश्विनीहयग्रीवात्मक मम बिंबराज प्रॆरणया मम बिंबराज प्रीत्यर्थं अस्मिन् शुभदिवसॆ श्री पुरंदराश्रमॊ निर्मिमाण: भव्य मंदिरॆ, श्री हरि-वायु-गुरु दॆवता मूर्तीनां प्रतिष्ठापना महा महॊत्सवांगत्वॆन तथा श्रीमज्जगनाथ दासवर्याणां द्विशतमान आराधना महॊत्सव संदर्भं पुरस्कृत्य "श्री पुरंदर विठल सॊवा ट्रस्ट्" संस्थानस्य अध्यक्ष्यवर्यादि सकल धर्मदर्शीनां तथा प्रत्यक्ष परॊक्षॊण सहाय सहकारादि विषयॊ अनुकूलिन: अनुकूल

इष्यमाणश्च भक्तानां अपि तत्साधन प्रतिबंधक समस्त अरिष्ट निरसन द्वारा, सर्वेष्ट सिद्ध्यर्थं, विशेषत: सर्वेषां सज्जनानां आयुरारोग्यैश्वर्यादि समस्त वांचितार्थ सिद्धि पुरस्सर ज्ञान भक्ति वैराग्य सिद्ध्यर्थम् तथा तद्वारा हरि कर्तृत्व, पूज्यत्व, स्वामित्व, भोक्तृत्वादि ज्ञान सिद्ध्यर्थे, अंते अत्यर्थ प्रसाद सिद्ध्यर्थे यथा शक्ति, यथा भक्ति श्रीमद्धरिकथामृतसार ग्रंथ पठण पारायणाख्य कर्म करिष्ये.

३. आदौ निर्विघ्नता सिद्धि, इष्टार्थ सिद्धि तथा क्षिप्र प्रसाद सिद्ध्यर्थे महा गणपति प्रार्थनां करिष्ये

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

निर्विघ्नमस्तु श्री विघ्नेश्वराय नम: ।
कार्य सिद्धिरस्तु श्री सिद्धि विनायकाय नम: ॥

॥ श्री क्षिप्रप्रसादाय नम: ॥

महा गणपत्यंतर्गत श्री भारती रमण मुख्य प्रणांतर्गत विश्वंभररूपि श्री हरयॆ नम:

४. अथ ऋषि छंदॊ दॆवता प्रार्थना

अस्य श्रीमध्धरिकथामृतसार महा ग्रंथस्य श्रीमज्जगन्नाथदासार्यॊ ऋषि:(शिरसि)
भामिनी षट्पदि इति छंद: (मुखॆ)
श्रीमज्जगन्नाथ विठलात्मक बिंबराजॊ दॆवता (हृदयॆ)
संकल्पित क्रमॆण यथा शक्ति, यथा भक्ति पूर्वक अर्थानुसंधान पुरस्सर पठण पारायणादिकं करिष्यॆ ॥

५. अथ समर्पणं

अनॆन श्रीमद्धरिकथामृतसार ग्रंथ पठण पारायणॆन, भगवान् अस्मद्गुरॊर्गुर्वंतर्गत श्रीमज्जगन्नाथ दासवर्यादि तथा श्रीमद्राघवेंद्रतीर्थवर्यादि समस्त सॊत्तम गुर्वंतर्गत, लातव्य चक्रवर्ति भाविसमीर श्रीमद्वादिराजतीर्थ गुर्वंतर्गत भारतीरमण मुख्यप्राणांतर्गत श्रीमज्जगन्नाथ विठलाभिन्न श्री हयग्रीवात्मक अस्मद्बिंबराज: प्रीयतां सुप्रीतॊ वरदॊ भवतु.

॥ सर्वं श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अच्यताय नम: अनंताय नम: गॊविंदाय नम:
अच्युतानंत गॊविंदाय नम: (त्रिवारं पठॆत्)